coordinated programme is to discover new bio-active molecules and use them as 'leads' for developing new drugs and standardise herbal formulations based on physico-chemical parameters. Two hundred plants have been identified for the purpose of screening various extracts therefrom against 20 diseases. In 1997-98, the protocols for collection, extraction and screening work have been laid down and the initial work on these taken up.

(c) In addition to the above, the ninth five year plan programmes on new drug discovery envisage synthesis of new molecules around basic structures of known bio-actives and advancing development work on promising new leads identified for antimalarial (relapse), anthelmintic, microfilaricide, antileshmania, hypolidaemic, hepatoprotective and female contraceptive.

(d) Filling and sealing of patents by CSIR over the five years is given in the Table below. Some of the outstanding achievements have been in development of technology for generic drugs, new catalysts, petrochemicals, chemical intermediates, roof supports for coal mines, low cost building materials.

Patents Filling (F) Sealing (S)

Patents	1992-93		1993-94		1994-95		1995-96		1996-97	
	F	S	F	S	F	S	F	S	F	S
India	232	38	198	80	241	104	260	131	209	92
Foreign	20	9	17	12	29	10	58	14	70	15

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुर्सधान परिषद् को उद्योगों की आवश्कताओं के प्रति और अनुक्रियाशील बनाना

307. **श्री शमशेर सिंह सुरजेवाला:**
श्री अजीत जोगी:

क्या विज्ञान और औद्योगिक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के वैज्ञानिक ढांचे और पेंटेंट संबंधी क्षमताओं में वृद्धि पर ध्यान केन्द्रीत करने के अतिरिक्त उस उद्योग की आवश्यकताओं के प्रति अधिक अनुक्रियाशील बनाने का विचार है;

(ख) (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) (ग) इस संबंध में क्या कदम उठाये गये हैं। अथवा उठाये जाने का विचार है?

(घ) **विज्ञान और प्रोद्योगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा विद्युत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र कुमार भगतराम अलघ)** (क) से (ग) सी.एस.आइ.आर. ने उद्योग सहित सामाजिक आर्थिक

(ङ) क्षेत्रों की विज्ञान और प्रौद्योगिकि आवश्यकताओं के मद्देनजर अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम आरम्भ किए है। सी.एस.आई.आर. उपभोक्ताओं की अनुभूत आवश्यकताओं के अनुसार सतत् रूप से अपने कार्यक्रमों और गतिविधियों को पूनः अभिमुख और पुनः संयोजित करता है। जनवरी, 1996 में इसमें सी.एस.आई.आर. 2001, भावी परिकस्पना एवं रणनीति नामक क्षेत पत्र की घोषणा की जिसमें उसमें मिशन को विम्रवत् रूप से प्रस्तुत किया है:- "वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान तथा विकास के ऐसे साधनो की व्यवस्था करना जिससे भारत के लोगों को अधिक से अधिक आर्थिक, पार्यावरणीय तथा सामाजिक लाभ हों।"

(च) पेटेन्ट के संबंध में सी.एस.आई.आर. देश में एक आग्रणी संगठन रहा है तथा इसने अक्तूबर, 1995 में बौद्धिक संपदा प्रबंधन नीति तैयार की। इसके अलावा सी.एस.आई.आर ऐसा संगठन है जिसने अन्य संगठनों की तुलना में सबसे अधिक भारतीय पेटेन्ट दर्ज किए हैं।

(छ) तथापि सी.एस.आई.आर. की विश्वव्यापी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए इसकी अवंसरचना को मजबूत और आधुनिक बनाया जा रहा है।